भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-2 /अंक-20 / फरवरी-2023

महा शिवरात्रि

www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष -2 / अंक-20 / फरवरी -2023

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

For Private Circulation Only

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

फरवरी माह

साका कैलेण्डर - 1944 | विक्रम संवत - 2079 | अयान - उत्तरायण | ऋतु - शिशिर

सोम		06 फा. कृ. प्रतिपदा, गोविन्द मास	13 फा. कृ. सप्तमी, शबरी जयंती, कालाष्टमी	20 फा. कृ. अमावस्या, सोमवती अमावस्या	27 फा. शु. अष्टमी, रोहिणी व्रत, मासिक दुर्गाष्टमी
मंगल		07 फा. कृ. द्वितीया	14 फा. कृ. अष्टमी, जानकी जयंती	21 फा. शु. प्रतिपदा/द्वितीया फुलैरा दूज, रामकृष्ण जयंती	28 फा. शु. नवमी
बुध	01 माघ शु. एकादशी, जया एकादशी व्रत	08 फा. कृ. तृतीया	15 फा. कृ. नवमी, महर्षि दयानन्द सरस्वती जयंती	22 फा. शु. तृतीया	
गुरू	02 माघ शु. द्वादशी, भीष्म द्वादशी	09 फा. कृ. चतुर्थी, द्विजप्रिय संकष्टी चतुर्थी	16 फा. कृ. एकादशी, विजया एकादशी व्रत	23 फा. शु. चतुर्थी, विनायक चतुर्थी	
शुक्र	03 माघ शु. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	10 फा. कृ. चतुर्थी	17 फा. कृ. द्वादशी	24 फा. शु. पंचमी	
शनि	04 माघ शु. चतुर्दशी	11 फा. कृ. पंचमी	18 फा. कृ. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत, महा शिवरात्री व्रत	25 फा. शु. षष्ठी, स्कन्द षष्ठी	
रवि	05 माघ शु. पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत	12 फा. कृ. षष्ठी, यशोदा जयंती	19 फा. कृ. चतुर्दशी/ अमावस्या	26 फा. शु. सप्तमी, मासिक कार्तिगाई	

फा. - फाल्गुन कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

जया एकादशी व्रत

माघ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को जया एकादशी के नाम से जाना जाता है। जया एकादशी के दिन व्रत रखने से एवं भगवान विष्णु की पूजा करने से व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति होती है। मृत्यु के उपरांत स्वर्ग की प्राप्ति के लिए जया एकादशी का व्रत एवं जया एकादशी व्रत कथा का पाठ जरूर करना चाहिए। मनुष्य के द्वारा जीवन काल में अनेक पाप हो जाते हैं तथा उन्हीं पापों की सजा से मुक्ति प्राप्त करने के लिए जया एकादशी का व्रत किया जाता है। इस व्रत को करने से हर तरह के पाप यहां तक की हत्या जैसे दोष से भी मुक्ति प्राप्त हो जाती है। इस प्रकार प्रेत योनि से मुक्ति पाकर स्वर्ग की प्राप्ति की कामना से भी इस व्रत को किया जाता है। जया एकादशी को दक्षिण भारत के कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के कुछ राज्यों में **“भूमि एकादशी”** या **“भीष्म एकादशी”** के रूप में भी जाना जाता है।

जया एकादशी की व्रत कथा -

एक बार नंदन वन में उत्सव रखा गया जिसमें सभी देवता एवं ऋषि मुनि उपस्थित थे। चारों तरफ किसी उत्साह एवं प्रसन्नता का माहौल था। गांधर्व गीत गा रहे थे और गंधर्व कन्याएं नृत्य कर रही थीं। वहीं पुष्पवती नामक गंधर्व कन्या ने माल्यवान नामक गंधर्व को देखा और उस पर आसक्त होकर अपने हाव-भाव से उसे रिझाने का प्रयास करने लगी। माल्यवान भी उस गंधर्व कन्या पर मुग्ध हो गया और वह भी अपने गायन का सुर-ताल भूल गया। इससे संगीत की लय टूट गई और समारोह का सारा आनंद बिगड़ गया। सभा में उपस्थित देवगणों को यह बहुत बुरा लगा। यह देखकर देव इंद्र भी क्रोधित हुए। संगीत एक पवित्र साधना है। इस साधना को भ्रष्ट करना पाप है, अतः क्रोधवश इंद्र ने पुष्पवती तथा माल्यवान को श्राप दे दिया- कि उन्हें मृत्युलोक में जाना होगा। उन्होंने पुष्पवती एवं माल्यवान को कहा कि गुरुजनों की सभा में इस प्रकार से असंयमित प्रदर्शन करके तुमने गुरुजनों का भी अपमान किया है, इसलिए इंद्रलोक में तुम्हारा रहना अब वर्जित है, अब तुम प्रेत योनि में जाकर असंयमी जीवन व्यतीत करना होगा।

इस प्रकार के श्राप को सुनकर वे अत्यंत दुखी हुए और हिमालय पर्वत पर प्रेत योनि में कष्ट सहित जीवन यापन करने लगे। उन्हें गंध, रस, स्पर्श आदि का तनिक भी बोध नहीं था। रात-दिन में उन्हें एक क्षण के लिए भी नींद नहीं आती थी। उस स्थान का वातावरण जीवन के अनुकूल नहीं था, ठंड होने के कारण वे बहुत कष्ट पाते थे। उन्हें भोजन भी सरलता से प्राप्त नहीं हो पाता था। इस तरह वे अत्यधिक कष्ट पूर्ण जीवन बिताने लगे।

श्री हरी की कृपा से एक बार माघ के शुक्ल पक्ष की जया एकादशी के दिन इन दोनों ने कुछ भी भोजन नहीं किया और न ही कोई अधर्म किया। उस दिन मात्र फल-फूल खाकर ही दिन व्यतीत किया और अत्यधिक कष्ट के साथ पीपल के वृक्ष के नीचे विश्राम करने लगे। उस दिन सूर्य भगवान अस्तांचल को जा रहे थे तो रात भी कठिनता से काटी। इस प्रकार अनजाने में ही दोनों से जया एकादशी का व्रत पूर्ण हो गया। दूसरे दिन प्रातः काल

होते ही प्रभु की कृपा से दोनों को प्रेत योनि से मुक्ति मिल गई और पुनः वे अत्यंत सुंदर अप्सरा और गंधर्व की देह प्राप्त करके तथा सुंदर वस्त्रों तथा आभूषणों से अलंकृत होकर स्वर्ग लोक को चले गए। उस समय आकाश में देवताओं ने भी उन पर पुष्पों की वर्षा की। स्वर्ग लोक में जाकर इन दोनों ने देव इंद्र को प्रणाम किया।

उन्हें उनके पूर्व रूप में देखकर इंद्र को भी बहुत आश्चर्य हुआ और उन्होंने पूछा- तुम्हें प्रेत योनि से किस प्रकार मुक्ति मिली, उसका पूरा वृत्तांत मुझे बताओ। देवेंद्र की बात सुन माल्यवान ने कहा - हे देवताओं के राजा इंद्र! **श्रीहरि की कृपा तथा जया एकादशी के व्रत के पुण्य से हमें प्रेत योनि से मुक्ति मिली है।** इंद्र ने कहा- हे माल्यवान! एकादशी व्रत करने से तथा भगवान श्रीहरि की कृपा से तुम दोनों प्रेत योनि से मुक्त होकर पवित्र हो गए हो तथा इसलिए हम देवताओं के लिए भी वंदनीय हो गए हो, क्योंकि शिव तथा विष्णु भक्त हम देवताओं के लिए भी वंदना करने योग्य हैं, अब आप प्रसन्नतापूर्वक देवलोक में निवास कर सकते हैं। इस प्रकार जया एकादशी के उपवास से प्रेत योनि से सहज ही मुक्ति मिल जाती है। जो मनुष्य इस एकादशी का व्रत कर लेता है, उसने मानो सभी तप, यज्ञ, दान कर लिए हैं एवं इसी के परिणाम से उसे मृत्यु के उपरांत स्वर्ग में स्थान मिलता है।

जया एकादशी का व्रत कैसे करें –

अन्य एकादशी की तरह इस व्रत को भी निर्जल एवं फलाहारी दोनों ही प्रकार से रख सकते हैं परंतु निर्जला व्रत रखना बहुत कठिन होता है इसलिए साधारणतया एकादशी के व्रत के दिन फलाहारी व्रत रखा जाता है जिसमें दिन में एक बार फलाहार व जल ग्रहण किया जाता है। जो व्यक्ति एकादशी का व्रत नहीं रख सकते हैं उन्हें इस दिन सात्विक भोजन का सेवन ही करना चाहिए। एकादशी के दिन चावल का प्रयोग वर्जित है इसलिए इस दिन घर में चावल नहीं पकाए जाते हैं। हिंदू धर्म में इस व्रत का बहुत महत्व है एकादशी व्रत के दिन प्रातःकाल स्नान करके विष्णु भगवान की मूर्ति स्थापित करें तथा संकल्प लेकर उनकी पूजा करें। भगवान विष्णु की पूजा तुलसी दल, पुष्प, जल, रोली, अक्षत तिल आदि सामग्री से की जाती है। **पूजा के बाद नारायण स्त्रोत एवं विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करने से विष्णु भगवान प्रसन्न होते हैं।** कुछ स्थानों पर भगवान श्री हरी के साथ लक्ष्मी जी की पूजा भी की जाती है। पूजा के बाद **“हरे कृष्ण महामंत्र”** का जाप करें।

- रूचि गोस्वामी जी, बीकानेर (राज.)

अगर आप अपने

'शब्दों के मोती'

भारतीय परम्परा की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट

पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

WHITE BERRY
RESIDENCY
LUXURIOUS
HOME
1 & 2 BHK
Jodi Flat (1+2 & 2+2)
NEAR POSSESSION
Google Location
QR Code:
www.whiteberryresidency.com
Book Now
98705 80810, 85913 69996
Asha Nagar, Thakur Complex, Kandivali (E), Mumbai.

www.kingswedsqueens.com
HER
and
HIM
Sample Text Sample Text
Wedding
+91 7303021123
GAATHBANDHAN
Kings weds Queens
PAPER - LESS
&
SHIPPING - FREE
WEDDING
INVITATION
Call Us

महा शिवरात्री

कहा जाता है कि आदि अनादि काल तक शिव ही सत्य है। भगवान शिव के प्रति सबको सच्ची आस्था है इसलिए ही शक्ति स्वरूप शिव-शंकर को अनंत माना गया है।

पुराणों के अनुसार भगवान शिव को सृष्टि के सृजनकर्ता कहा गया हैं जिनकी पूजा और भक्ति से हमारे समस्त कष्ट दूर हो जाते है। **शिव जिनसे योग परंपरा की शुरुआत मानी जाती है इसलिए उनको आदि (प्रथम) गुरु माना जाता है।** भगवान शिव की आराधना के लिए हर दिन अच्छा है पर सोमवार को शिव जी की पूजा की श्रेष्ठ माना जाता है। महादेव के लिए मुख्यतः सोमवार का व्रत, सावन माह में आने वाले सोमवार व्रत, प्रदोष व्रत, गणगौर पूजा, तीज व्रत और शिवरात्रि व्रत रखे जाते हैं।

फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यामादिदेवो महानिशि।
शिवलिङ्गतयोद्भूतः कोटिसूर्यसमप्रभ।।

वैसे तो हर माह शिवरात्रि होती है परन्तु **फाल्गुन माह के कृष्ण पक्ष में चतुर्दशी के दिन भगवान शिव का ज्योतिर्लिंग प्रकाट्य हुआ था** (शिवपुराण और ईशान संहिता के अनुसार) इसलिए इस दिन को **"महाशिवरात्रि"** कहते है, जिसका महत्व हर माह की शिवरात्रि से कई गुना अधिक होता है। इस दिन देवों के देव महादेव की विशेष रूप से पूजा अर्चना की जाती है।

शिव-भक्त इस दिन शिवलिंग पर जल, कच्चा दूध, दही, पुष्प, बेल-पत्र, धतूरा, चन्दन आदि चढ़ाकर पूजा करते है, आज के दिन व्रत भी करते हैं। जिसके प्रभाव से जीवन के बाद मृत्यु होने पर बैकुंठ धाम जाने का सुख मिलता है। संसार में सभी दुःखों से मुक्ति मिलती है। विवाहित महिलाएं अपने पति के सुखी जीवन के लिए प्रार्थना करती है व कुंवारी कन्याएं मनचाहे वर के लिए इस दिन खासतौर पर व्रत रखती हैं और शिव की पूजा करती है।

शिवरात्रि में **शिव+रात्रि** शब्द है तो जाहिर है कि शिव की पूजा-अर्चना के साथ रात्रि जागरण भी महत्वपूर्ण होता है। परंपरा के अनुसार, इस रात को ग्रहों की स्थिति ऐसी होती है जिसमे ऊर्जा की एक शक्तिशाली प्राकृतिक लहर बहती है जो हम मनुष्यों के लिए लाभकारी मानी जाती है इसलिए रात्रि जागरण करना चाहिए। भगवन शिव को **"नटराज"** के रूप में भी पूजा जाता है तो इसमें शास्त्रीय संगीत और नृत्य के विभिन्न रूप से भक्तगण अपने आराध्य देव की पूजा करते हैं।

महाशिवरात्रि मनाने के 3 मुख्य कारण है –

1. शिवपुराण के अनुसार फाल्गुन माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को महादेव

शिवलिंग स्वरुप में प्रकट हुए थे। इसलिए हर साल फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को महाशिवरात्रि पर्व के रूप में मनाते हैं।

2. मान्यताओं के अनुसार महाशिवरात्रि के दिन शिव और शक्ति विवाह के बंधन में बंधे थे। प्रभु शिव ने वैराग्य छोड़कर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किए था इसके लिए कई स्थानों पर महाशिवरात्रि के शुभ अवसर पर शिव जी की बारात निकाली जाती है, शिवभक्त शिव-पार्वती का विवाह भी कराते हैं। भगवान भोलेनाथ और माता पार्वती का विवाह कराने से वैवाहिक जीवन की समस्याएं दूर होती हैं एवं दांपत्य जीवन भी खुशहाल व्यतीत होता है।

3. पौराणिक कथाओं के अनुसार महाशिवरात्रि के दिन ही 12 ज्योतिर्लिंग (प्रकाश के लिंग) प्रकट हुए थे। जो पूजा के लिए भगवान शिव के पवित्र धार्मिक स्थल और केन्द्र हैं। यह सभी ज्योतिर्लिंग स्वयम्भू के रूप में जाने जाते हैं, जिसका अर्थ है **"स्वयं उत्पन्न"**। इन 12 ज्योतिर्लिंगों के प्रकट होने के उत्सव के रूप में भी महाशिवरात्रि मनाई जाती है।

यह बारह स्थानों पर बारह ज्योर्तिलिंग स्थापित हैं, उनके नाम और स्थान –

1. **पहला ज्योतिर्लिंग है सोमनाथ ज्योतिर्लिंग** - सोमनाथ यह शिवलिंग गुजरात के काठियावाड़ में स्थापित है। शिव भक्त चन्द्रमा को क्षय रोग होने के श्राप से मुक्ति के लिए अरब सागर के तट पर चन्द्रमा ने शिवलिंग की स्थापना की और शिव जी की तपस्या की, भगवान शिव के आशीर्वाद से वह शिवलिंग **"सोमेश्वर यानी सोमनाथ"** कहलाया गया।

2. **दूसरा ज्योतिर्लिंग है मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग** - श्री शैल मल्लिकार्जुन शिवलिंग मद्रास में कृष्णा नदी के किनारे पर्वत पर स्थापित है। इसका महत्व कैलाश पर्वत के समान माना जाता है। मल्किकार्जुन में मलिका माँ पार्वती और अर्जुन प्रभु शिव का स्वरूप है।

3. **तीसरा ज्योतिर्लिंग है महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग** - महाकाल उज्जैन में स्थापित महाकालेश्वर शिवलिंग, जहाँ शिवजी ने दैत्यों का नाश किया था इसलिए यहां की भस्म आरती की मान्यता भारत के हर कोने में मानी जाती है।

4. **चौथा ज्योतिर्लिंग है ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग** - ॐकारेश्वर (मध्य प्रदेश) में नर्मदा तट पर पर्वतराज विंध्य की कठोर तपस्या से खुश होकर वरदान देने के लिए प्रभु यहां प्रकट हुए।

5. **पांचवा ज्योतिर्लिंग है केदारनाथ ज्योतिर्लिंग** - यह हिमालय का दुर्गम स्थल है जहाँ पर पहुंचने के लिए 14 किलोमीटर की चढ़ाई करनी होती है। इसके दर्शन अक्षय तृतीया को खुलते है और दिवाली के बाद बंद हो जाते है।

6. **छठा ज्योतिर्लिंग है भीमशंकर ज्योतिर्लिंग** - महाराष्ट्र के पुणे से लगभग 110 किलोमीटर दूर सह्याद्रि पर्वत पर स्थित है मंदिर के पास भीमा नदी बहती है।

7. **सातवां ज्योतिर्लिंग है विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग** - बनारस के काशी विश्वनाथ मंदिर में स्थापित विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग। माना जाता है कि काशी भगवान भोलेनाथ के त्रिशूल पर ही टिकी है।

8. **आठवां ज्योतिर्लिंग है त्र्यंम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग** - नासिक (महाराष्ट्र) से 25 किलोमीटर दूर त्र्यंम्बकेश्वर में स्थापित ज्योतिर्लिंग, जहां पर शिवलिंग के दर्शन कांच से होते है।

9. **नवा ज्योतिर्लिंग है नागेश्वर ज्योतिर्लिंग** - गुजरात के द्वारकाधाम के निकट जामनगर जिले में नागेश्वर ज्योतिर्लिंग स्थापित है। यहां भगवान शिव **"नागों के ईश्वर"** के रूप में पूजनीय है।

10. **दसवां ज्योतिर्लिंग है बैजनाथ ज्योतिर्लिंग** - बैजनाथ शिवलिंग झारखंड के बैद्यनाथ धाम में स्थापित है। इसे रावणेश्वर धाम के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि भगवान शिव ने यह रावण की तपस्या से खुश होकर उनको दिया था और रावण ने लघुशंका आने के कारण शिवलिंग को बैजू नाम के लड़के को पकड़ाकर लघुशंका करने चला गया। बैजू ने शिवलिंग को वहीं स्थापित कर दिया। इसलिए बैजनाथ धाम के नाम से पुकारा जाता है।

11. **ग्यारवां ज्योतिर्लिंग है रामेश्वर ज्योतिर्लिंग** - रामेश्वरम् त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु - मद्रास पुराना नाम) समुद्र तट पर भगवान श्रीराम द्वारा स्थापित रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग। यहां २४ कुंड में स्न्नान करने के बाद मंदिर जाते है, शिवलिंग के साथ मणि दर्शन बहुत शुभ माना जाता है।

12. **बारहवां ज्योतिर्लिंग है घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग** - घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग औरंगाबाद जिले (महाराष्ट्र) के दौलताबाद के वेरुलगांव में स्थापित है। यह शिवलिंग शिव की परम भक्त घुष्मा की असीम भक्ति का स्वरूप है। उसी के नाम पर ही इस शिवलिंग का नाम घुष्मेश्वर/घृष्णेश्वर पड़ा था।

भगवान शिव की पूजा कैसे करे ?

भगवान शिव की पूजा को अभिषेक करना कहते है, जिसमे **जलाभिषेक : जल से और दुग्धाभिषेक : दूध से किया जाता है**। भगवान शिव ने जब हलाहल विष को पिया तब उस विष के प्रभाव को ठंडा करने के लिए देवताओ ने जल, दूध, दही से प्रभु को स्न्नान करवाया था। इसलिए भगवान शिव का अभिषेक इन सब से किया जाता है।

- सर्वप्रथम सूर्योदय से पहले स्न्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहनें।
- शिव मंदिर या घर के मंदिर में जाकर भगवान को प्रणाम करे और एक साफ आसान बिछा के बैठ जाये।
- शिवलिंग पर पानी, दूध और शहद, गन्ने के रस के साथ तांबे के कलश से अभिषेक करे। अभिषेक के साथ **"ॐ नमः शिवाय"** मंत्र का उच्चारण करे। पंचामृत से अभिषेक करने से मानसिक शांति मिलती है।
- उसके बाद पुष्प (गेंदे के फूल की माला), आकड़ा के फूल, बेर एवं बिलपत्र अर्पण करे, जो आत्मा को शुद्धि प्रदान करते हैं।
- पान के पत्ते शिव जी को अर्पण करे, जो सांसारिक सुखों के साथ सन्तोष दायी हैं।
- फल चढ़ाये, जो इच्छाओं की सन्तुष्टि को दर्शाता हैं।
- धूप/दीपक से आरती करे, दीपक जो ज्ञान की हमे ज्ञान की रौशनी देता है।
- अंत में 108 बार **"ॐ नमः शिवाय", "महा मृत्युंजय मंत्र", "शिव तांडव स्तोत्र"** या फिर

"रुद्रामंत्र" का जाप करे, जो दीर्घायु का प्रतिनिधित्व करता है।

शिवरात्रि कहा और कैसे मनाई जाती है –

भारत के अलावा नेपाल और बांग्लादेश में भी महाशिवरात्रि का पर्व बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। शिव भक्त मंदिर में जाके अभिषेक एवं पूजा करते है।

मध्य भारत - मध्य भारत में शिव के अनुयायियों की एक बड़ी संख्या है। महाकालेश्वर मंदिर, (उज्जैन) सबसे लोकप्रिय भगवान शिव का मंदिर है जहाँ हर वर्ष शिव भक्तों की एक बड़ी मण्डली महा शिवरात्रि के दिन पूजा-अर्चना करती है। ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग ॐकारेश्वर, शिव मठ मंदिर में तथा नदियों के घाट, अन्य स्थानों पर यह त्योहार बहुत धार्मिक उत्साह के साथ मनाया जाता है। शिव मंदिर में भक्तों द्वारा सहस्त्र धारा का आयोजन किया जाता है।

कश्मीर - कश्मीरी ब्राह्मणों के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण त्योहार माना जाता है। महाशिवरात्रि का त्योहार शिव और पार्वती के विवाह के रूप में हर घर में मनाया जाता है। यह उत्सव महाशिवरात्रि के 3-4 दिन पहले यह शुरू हो जाता है और उसके दो दिन बाद तक जारी रहता है।

दक्षिण भारत - महाशिवरात्रि आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और तेलंगाना के सभी मंदिरों में व्यापक रूप से मनाई जाती है।

बांग्लादेश - बांग्लादेश में हिंदू महाशिवरात्रि मनाते हैं। भक्त भगवान शिव के दिव्य आशीर्वाद को प्राप्त करने के लिए व्रत रखते हैं। कई बांग्लादेशी हिंदू इस दिन को **"चंद्रनाथ धाम (चिटगांव)"** जाते हैं। उनकी मान्यता है कि इस दिन व्रत व पूजा करने से मन चाहा पति या पत्नी की प्राप्ति होती है।

नेपाल - महाशिवरात्रि को नेपाल के **"पशुपति नाथ मंदिर"** में सामूहिक महोउत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस पावन अवसर पर काठमांडू के पशुपतिनाथ मन्दिर पर भक्तजनों की भीड़ लगती है जहां पर नेपाल के अलावा भारत समेत विश्व के अन्य स्थानों से भी शिवभक्त, तपस्वी और जोगी इस मन्दिर में शिव की अराधना करने आते हैं।

महाशिवरात्रि का महत्व

हमारे देश के सांस्कृतिक मान्यता के अनुसार 33 करोड़ देवी देवताओं में भगवान शिव-शंकर को ही सर्व शक्तिमान, सर्व व्यापक एवं सभी देवी देवताओं का देव माना जाता है। त्रिदेव ब्रह्मा विष्णु और महेश तीनों ही शिव रूप हैं।

आकाश-पाताल तीनों लोक के आदि देव महादेव ही हैं।

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें
सम्पर्क करें!

- ❖ व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- ❖ भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर **73030 21123** को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।

- ❖ ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ❖ ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- ❖ **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

81. द्यूत-क्रीडा (जुआ) के बुरे परिणामों को जानते हुए भी महाराज युधिष्ठिर ने जुआ खेलने का निमंत्रण क्यों स्वीकार किया...? - उस काल में जुआ खेलना राजसी शान-शौकत का प्रतीक था। जुआ खेलने के आमंत्रण को स्वीकार न करना युद्ध में पराजय को स्वीकार करने के समकक्ष माना जाता था।

82. द्यूत सभा में किस व्यक्ति ने दुर्योधन व दुशासन की कुचेष्टाओं का खुले आम समर्थन किया...? - अपने राजधर्म के कारण सभी कौरव सभासद व महारथी मौन थे पर कर्ण ने द्रौपदी का चीर हरण करने का समर्थन किया।

83. किस कौरव द्वारा द्रोपदी का चीर हरण का प्रयास किया गया...? - दुर्योधन के छोटे भाई, बलशाली दुशासन द्वारा।

84. द्रोपदी की लाज किसने रखी...? - राज सभा में विराजमान विद्वान व महारथी जनों से निराश हो जाने पर द्रौपदी ने आर्त भाव से भगवान श्रीकृष्ण को पुकारा- "हे गोविन्द, हे द्वारकाधीश, हे सच्चिदानन्दस्वरूप प्रेमघन, हे गोपीजन वल्लभ, हे नाथ, मैं आपकी शरण में हूं मेरी रक्षा कीजिए", शरणागत द्रौपदी की पुकार सुन शरणागत वत्सल, भगवान श्रीकृष्ण ने उसकी साड़ी के चीर को अनन्त कर दिया। चीर को खींचते-खींचते, दुशासन थक कर गिर गया। श्रीकृष्ण की कृपा से पापी अपने कुत्सित इरादों में सफल नहीं हुआ।

85. द्रौपदी के चीरहरण के समय किस पाण्डव ने, कैसी प्रतिज्ञा की...? - भीमसेन ने गरजते हुए शपथ ली कि रणभूमि में दुशासन की छाती फाड़कर उसका खून पी जायूँगा। अठारह दिनों के महाभारत युद्ध के सोलहवें दिन भीम द्वारा दुशासन को मारकर अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण किया गया।

86. भीमसेन ने दुर्योधन की बाबत एक और क्या प्रतिज्ञा की...? - चीर हरण के दौरान दुर्योधन, भीमसेन को उत्तेजित करने के लिये अपनी बायीं जांघ दिखाने लगा तो क्रोधित होकर भीमसेन ने कहां कि - "महायुद्ध में यदि तेरी यह जांघ गदा से न तोड़ दूं तो मुझे अपने पूर्व पुरुषों के समान सद्गति प्राप्त न हो।”

87. जब धृतराष्ट्र ने द्रौपदी को मुक्त करते हुए वरदान मांगने को कहा तो उसने क्या मांगा...? - रथ और धनुष सहित पांचों पांडवों को दासत्व से मुक्त कर देने का वर मांगा। धृतराष्ट्र ने पांडवों को मुक्त करने के साथ-साथ जीता हुआ समस्त धन भी लौटा दिया। साथ ही धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को दूसरी बार जुआ खेलने के लिये आमंत्रित किया।

88. दूसरे बार जुआ खेलने पर क्या शर्त लगी...? - जो हारेगा वह मृगचर्म धारण करके बारह वर्ष तक वन में रहेगा और तेरहवां वर्ष अज्ञातवास में बिताना होगा। अज्ञातवास के दौरान यदि उनकी पहचान हो गयी तो पुनः बारह वर्ष के लिए वनवास में रहना पड़ेगा।

शर्त पूरी होने के पश्चात उचित रीति से राज्य को बांट लिया जायेगा।

89. धृतराष्ट्र के पुत्रों को किसने मारा...? - महाभारत युद्ध के दौरान दुर्योधन-दुशासन सहित, धृतराष्ट्र के समस्त सौ पुत्रों का संहार भीमसेन द्वारा किया गया। जब मृगचर्म धारण कर पांडव वन गमन कर रहे थे तो दु:शासन के कटु वचनों के प्रत्युत्तर में भीमसेन ने ऐसा करने की शपथ ली।

90. क्या पांडवों की माता कुंती भी उनके साथ वन गमन को गयी...? - नही। पांडवों के वनवास के दौरान माता कुंती कौरवों के महामंत्री और धर्मराज के अवतार विदुर के घर ठहरी।

91. आदि पर्व क्या है...? - यू तो पर्व का आशय त्योहार होता है। परन्तु महाभारत में पर्व का आशय अध्याय के समकक्ष है। वेदव्यास द्वारा समस्त महाभारत को अठारह पर्वों अर्थात अध्यायों में बांटा गया है। आदिपर्व महाभारत का प्रथम पर्व है। इसमें कुछ उपाख्यान सहित पुरुवंश से अर्जुन-कृष्ण द्वारा खाण्डववन के दाह तक की कथा है।

92. सभापर्व क्या है...? - यह महाभारत का दूसरा पर्व है। इसमें मयदानव द्वारा इंद्रप्रस्थ के निर्माण से पांडवों के जुए में राज्य हारकर वनगमन तक की कथा है।

उपरोक्त प्रश्नों के माध्यम से आदिपर्व व सभा पर्व में वर्णित महाभारत की कथा को बताया गया है। अब तीसरा पर्व, वन पर्व प्रारंभ होता है।

93. अक्षय पात्र क्या था...? - अपने पुरोहित धौम्य के द्वारा बताये गये एक सौ आठ नामों की स्तुति से भगवान सूर्यदेव की आराधना करने पर युधिष्ठिर को सूर्यदेव से अक्षय पात्र की प्राप्ति हुई।

94. अक्षय पात्र की क्या विशेषता थी...? - द्रोपदी द्वारा अपने रसोईघर में जो भोजन सामग्री बनायी जाती, वो इस पात्र में द्रोपदी के भोजन करने तक भरी रहती, उसका क्षय नहीं होता। इस अक्षय पात्र के माध्यम से पांडव, वनवास काल के दौरान अपने सभी मेहमानों का भोजन-सत्कार करने में सफल रहे। सभी आगंतुकों को भोजन कराने के पश्चात पांडव भोजन करते और सबसे अंत में द्रोपदी। द्रोपदी के भोजन के पश्चात इस पात्र की सामग्री, अगले दिन तक के लिए समाप्त हो जाती।

95. महर्षि मैत्रेय ने दुर्योधन को क्यों और क्या श्राप दिया...? - जुए के घटनाक्रम को सुन धृतराष्ट्र के हितैषी, महर्षि मैत्रेय हस्तिनापुर पधारे। जब वे दुर्योधन को पांडवों के साथ मेल-मिलाप की सलाह दे रहे थे तो दुर्योधन मुस्कुराते हुए पैर से जमीन कुरेदते हुए अपनी जांघ पर हाथ से ताल ठोकने लगा। दुर्योधन की उद्दंडता को देख महर्षि ने श्राप दिया कि कौरव-पांडव युद्ध में भीमसेन गदा की चोट से तेरी जांघ तोड़ डालेंगे।

- माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राज.)

जीवन एक संसार

अगर जिंदगी में
सुकून चाहते हो तो
अपने काम पर ध्यान दो
लोगो की बातों
पर नहीं..!!

घर के अंदर जी भर के रो
लो पर दरवाजा हँस कर ही
खोलना... क्योंकि लोगो
को पता लगा कि तुम टूटे
हुए हो तो वो तुम्हें
लूट लेंगे.!!

अगर लोग केवल जरूरत
पर याद करते है तो बुरा
मत मानो बल्कि गर्व करो
क्योंकि एक मोमबती की
याद अंधकार होने पर ही
आती है.!!

बिना कुंडली मिलाए
आजीवन चलने वाला
एक अदभुत संबंध
केवल मित्रता है..!!

जो लोग आपको रोज
मैसेज भेजते है वो खाली
नहीं होते है.. बल्कि
उनको हमेशा आपके
नजदीक रहने का चाहत
होती है..!!

श्रेय मिले ना मिले पर
अपना श्रेष्ठ जरूर देते
रहना.. क्योंकि आशा
हमेशा निराशा से
बेहतर होती है..!!

लघुकथा- यह घर बहुत हसीन है

वह अपने उस छोटे से घर को बहुत ज्यादा प्यार करता था। उस घर की एक-एक चीज से, एक-एक सदस्य से।

एक अनुभवी माली की तरह वह अहर्निश बिला - नागा अपनी बग़िया को सजाने-सँवारने में लगा रहता। बाजार से कलेण्डरनुमा एक ब्लैकबोर्ड लाकर बैठक की दीवार पर टाँग दिया और रोज सुबह रंग-बिरंगी खल्लियों से उसपर कोई उक्ति, कोई स्लोगन उकेर देता था। एक बार ज़्यादा ही खुश हुआ तो लिख दिया कि 'यह घर बहुत हसीन है'। लेकिन थोड़ी ही देर में उस लिखे को अपनी धोती के कोर से मिटा भी दिया। माँ की बात याद आ गयी। कहा था कि अपने सुख और ख़ुशी को दुनिया के सामने जतलाने से किसी न किसी की बुरी नज़र लग जाती है। माँ थी पुराने ख़यालातों वाली - थोड़ी सी दक़ियानूस। रोज घर की देहरी लांघने की मजबूरी नहीं रही तो निभा गयी। अब कहाँ हो पाएगा भला? लेकिन बहुत कम में बहुत ज्यादा का जो एहसास माँ दिला गयी, अब बहुत हो जाने के बाद भी वो एहसास पैदा नहीं हो पाता। चावल-दाल में ही नहीं बल्कि कपडे-लत्ते, गहना-गुड़िया, सम्बन्ध - मर्यादा... हर मामले में! **पहले कठिनाइयां थी परन्तु अभाव का भाव नहीं था। अब दुनिया मुट्ठी में है पर अभाव स्थाई भाव में है.....।**

घर हसीन है, इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए बहुत सारी तैयारियों की जरूरत होती है और उन तैयारियों की नियमित जांच-परख के बाद ही "ओके-टेस्टेड" का स्टिकर चिपकाना था पर जिंदगी में हम कई बार उत्साह के मारे जल्दबाजी कर जाते हैं। उसकी इस जल्दबाजी का सारा दोष उसके मत्थे नहीं मढा जा सकता था। दरअसल वह एक ऐसे गुरु का शागिर्द बन चुका था जो दुनियाभर के थके माँदे अंग्रेज़ीदां लोगों को अपनी बोली की गोली खिलाकर हताशा और निराशा के दलदल से निकाल बाहर करने के दावे करता था। यूँ तो उसे गुरूजी की बहुत सारी बातें अच्छी लगती थीं और वह उन संदेशों को अपने जीवन और आचरण में उतारने की कोशिश भी करता था परन्तु उनकी एक बात जो उसके हृदय में पत्थर की लक़ीर की भाँति अंकित हो गयी थी, वो थी "मेक इट और फेक इट" अर्थात जो करना है, पाना है, लेना है वो हासिल कर लो और जब तक हासिल नहीं कर पाते तब तक दुनिया के सामने यह दिखाने का प्रयत्न करते रहो कि तुमने वह सब कुछ हासिल कर लिया है।

बात पते की थी, प्रभावशाली भी और व्यावहारिक भी! दुनिया पुस्तक के आवरण को ही तो देख पाती है। दुनिया मशरूफ़ है अपने आप में। उसके पास इतना वक़्त नहीं है कि वह किताबों के पन्नों को परखने की सरदर्दी पाल। पहले कभी होता होगा। अब तो सब कुछ फटाफट चाहिए। किस्तों में ही सही पर अभी के अभी। होम लोन से लेकर संबंधों तक में किस्तों की सुविधा आ जाने से सहूलियत बढ़ गई है। जिस ज़माने में लोन सुलभ नहीं थे तो लोग दीवारों पर प्लास्टर कहाँ चढ़ा पाते थे? दीवारों की असलियत सालों साल लोगों का मुंह चिढ़ाती रहती थी। समय - धूप - बारिश - आंधी अपनी छाप ईंटों की क्यारियों

में छोड़ती चली जाती थीं। प्लास्टर होने से बहुत सारी गोपन बातें बेपर्द होने से बच जातीं, पर ऐसा हो नहीं पाता था....।

किस्तों की बात से ही एक और बात याद आ गयी। पहले एक ही सम्बन्ध को सालों-साल, दशकों तक ढोते रहने की एक उबाऊ परम्परा थी लेकिन अब आधुनिकता ने पुराने पड़ते सम्बन्धों को परित्यक्त अथवा कबाड़ घोषित करने की स्वतन्त्रता दे दी है। भोजन और परिधान में विविधता बढ़ने के साथ-साथ सम्बन्धों में भी नयेपन की तलाश शुरू हो गयी है। आज कल वेब सीरीज में परोसी जानेवाली भोंडी कहानियां भी शायद समाज के इसी ट्रेंड के तरफ इशारा करती हैं। हर पुरानी चीज़ से मोहभंग को जायज़ ठहरा दिया गया है शायद....।

उसकी उम्र ढलान पर थी। बच्चे बड़े हो चुके थे। सत्ता हस्तांतरण का वक़्त आने को था। छोटा सा बग़ियानुमा मकान अपने बासीपन की वज़ह से ऊर्जा, ओज और दर्प से भरे नवयुवकों को रास नहीं आ रहा था। घर में अहिंसक अवज्ञा आंदोलन का दौर चला और उसे गाँव की पुश्तैनी ज़मीन औने-पौने दाम में बेचनी पड़ गयी। पैसों की गर्माहट से शांति बहाल हो गयी। घर का जीर्णोद्धार करना आवश्यक था। एक प्रतिष्ठित आर्किटेक्ट ने अत्याधुनिक डिज़ाइन और फर्निशिंग से युक्त पूरा हिसाब बना दिया और आश्वस्त किया कि ढाई करोड़ में ऐसी चीज बन कर निकलेगी कि लोग दांतों तले अंगुलियाँ दबाने लगेंगे।

सत्ता पर अभी अभी काबिज हुए लोगों ने आर्किटेक्ट की बातों का शत-प्रतिशत पालन किया। जो चीज़ बन कर निकली वो वाकई अद्भुत थी। इतना आकर्षक मकान पूरे शहर में इससे पहले बना ही नहीं था। मकान को अंदर बाहर से सुसज्जित करने में किसी प्रकार की कोताही नहीं बरती गयी। पापा को खुली जगह में रहने की आदत है और गार्डनिंग उनकी हॉबी है इसलिए बच्चों ने 10x10 का एक हवादार आउट हाउस भी बनवा दिया था। उसी आउट हाउस में घर की सारी पुरानी और गैर जरूरी चीजें सजा दी गयीं। बग़िया के मालिक ने जब अपनी खाट वहां जमाई तो कलेण्डरनुमा ब्लैकबोर्ड को बिल्कुल सामने की दीवार पर लगाया और सुनहरे आकर्षक अक्षरों में लिख दिया - **"यह घर बहुत हसीन है"**।

- नीरज कुमार पाठक जी,

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका
के पुराने सभी अंकों को
देखने के लिए किताब के
आइकन पर स्पर्श करें !

हंसी-खुशी के पल

सर्दियों में इंसान नहाने से
पहले Silent Mode पर रहता है,
नहाते वक्त Ringtone Mode
पर और नहाने के बाद
Vibration Mode पर...!

मरीज - डॉक्टर साहब
पता नहीं किसने मेरी कसम
खायी है...?
डॉक्टर - क्यों...?
मरीज - धीरे-धीरे मेरे बाल
झड रहे है ....!

आज तक ऐसी कोई मशीन
नहीं बनी जो रसोई समेट दे,
बोतलें भर के रख दे, बस
परमाणु बम जैसे ही
अविष्कार करों सब...!
😜 😛 😝 😝 😜

जब भी मैं पढने बैठू
मेरा दिल दीवाना बोले...
.
😄 😁 😆 😅 😂
.
सोले सोले सोले सोले ...!

चिंटू - अच्छा बताओ सब पानी
क्यों पीते है...?
पप्पू - क्योंकि, पानी को
चबा नहीं सकते है इसलिए
पानी पीते है...!

टीचर - तुम्हारा रिजल्ट खराब
आया है तो पापा को बुला के
लाना, नही तो रिजल्ट को
फेसबुक पर अपलोड कर देंगे
पापा को टेग करके..।
छात्र - बेहोश है...!

लघुकथा- भूलते रिश्तों की चीख

घर में शादी का माहौल था। आंगन में लगन बंधाने की रस्म की तैयारी चल रही थी। तीन दिन बाद सरला की शादी थी।

लड़का- सी आर पी एफ का जवान था। दो माह पहले ही ज्वाइनिंग हुई है। शादी के बाद उसे सीधे ट्रेंनिग में शामिल होना था। नौकरी वाला दामाद मिलने से घर में सभी खुश थे। घर आंगन में हंसी खुशी का माहौल था। परन्तु सरला की फूफी मीरा देवी बेहद नाराज़ दिख रही थी। जब से आई है ठीक मुंह किसी से बात नहीं कर रही थी। मेहमान वाले घर में अब भी अकेली बैठी कहीं खोई हुई सी थी। दूर के रिश्तेदारों का आना शुरू हो गया था। सभी के चेहरों में खुशी के रंग चढ़े हुए थे।

सरला की मां रेणुका देवी की ठाठ देखते ही बनता था। तभी आंगन से रेणुका देवी की आवाज सुनाई पड़ी। अपनी दूसरी बेटी सारिका जो कार्मल स्कूल में कक्षा सात में पढ़ रही थी से कह रही थी - देखो फूफी कहां बैठी है, बुला लाओ! चोक पुराई करनी है !

सारिका सरपट मेहमान वाले घर में दौड़ गई पर उल्टे पांव भाग आई और मां के आगे रोने लगी। उसकी कानों में अब भी फूफी मीरा देवी की फटकार गूंज रही थी - क्या बुआ आंटी-बुआ आंटी लगा रखी है। चल भाग यहां से...!

मां ने पूछा क्या हुआ किसी ने कुछ कहा क्या ?
हां मैंने कहा...! फूफी ने आंगन में कदम रखा।
क्या हुआ दीदी, किसी ने कुछ कहा है क्या? देख रही हूं आप जब से आई है। खुश नहीं है।
बेटीयों को क्या पढ़ा रही है? जब संस्कार ही नहीं बचेगा तो रिश्ते और रिश्तेदार कैसे बचेंगे?
हम कुछ समझे नहीं! आप कहना क्या चाहती है दीदी?
हमसे कोई गलती हुई हो तो आप बड़ी है, समझा सकती है और डांट भी सकती है पर ऐसे मौके पर...!

यही तो आज के बच्चों को क्या पढ़ाया जा रहा है? शहर में पढ़ने लगी तो बड़े छोटे की पहचान भूल जाओ। गांव समाज के संस्कार भूल जाओ। दादा-दादी, काका-काकी, मामा-मामी कहने में शर्म आने लगे तो वैसे स्कूल की पढ़ाई से अच्छी है गांव के स्कूल की पढ़ाई। यहां ऐसी आंटी-आंटी की घंटी की पढ़ाई पर जोर तो नहीं दिया जाता है।

देखो तो भला - फूफा फूफी कह बुलाना शर्म लगता है! उसे सीधे मौसी बुलाना तोहिन लगता है। उसे सीधे मामी कह बुलाना गंवारपन लगता है।

जिसे देख वही - बुआ आंटी, मौसी आंटी, मामी आंटी! यह सब क्या है? आज फूफी बुलाने में शर्म आ रही है। कल फूफी को घर बुलाने में शर्म आने लगेगी।

कल ही की बात है, रघुवीर काका का बेटा बोकारो सीटी कॉलेज में पढ़ता है। घर आये अपने फूफा को फूफा न कहकर अंकल-अंकल कह दो बार पुकारा। फूफा ने कोई जवाब नहीं दिया। यह देख उसकी मां झाड़ू लेकर निकली और बेटे की ओर लपकी नालायक, बहुत पढ़ लिया! फूफा कहने में शर्म आती है और एक झाड़ू लगा दी।

बस करो दीदी ! बच्ची की जान लेगी क्या! सारिका फूफी का पांव छूकर माफी मांगो और आइंदा कभी बुआ आंटी नहीं सीधे फूफी बुलाएगी.. जाओ।

माफ करो फूफी! आगे से ऐसी गलती नहीं करूंगी और सारिका ने सचमुच कान पकड़ लिए। यह देख सब ठहाका लगा हंस पड़े।

आओ दीदी ..चोक पुराई....!

- श्यामल बिहारी महतो जी, बोकारो (झारखंड)

पारंपरिक व्यंजन-सेब की खीर

महा शिवरात्रि व्रत पर सेब की खीर का प्रसाद बनाये और भगवान शिव को भोग लगाए।

सामग्री – दूध फुलक्रीम - 1 लीटर (5 कप), बेकिंग सोडा - आधा पिंच, सेब - 400 ग्राम (मीडियम आकार के 2 सेब), चीनी - 75 ग्राम (1/3 कप), काजू - 10, किशमिश – 15 / 20, पिस्ते - 7/8, छोटी इलाइची - 4

विधि - दूध को किसी भारी तले की कढ़ाई में गरम करने के लिये गैस पर रख दीजिये। दूध को उबाल आने के बाद चम्मच से चलाये और दूध के आधा रहने तक उबाल लीजिये, उबलते दूध को थोड़ी थोड़ी देर में चम्मच से नीचे तले तक ले जाते हुए चलाये ताकि दूध कढ़ाई के तले में लगे नहीं।

- कुछ काजू के टुकड़े लीजिये और कुछ काजू साबुत लीजिये जो खीर को सजाने के काम में आएंगे। किशमिश के डंठल तोड़कर धो लीजिये। पिस्ते की बारीक कतरन ले और छोटी इलाइची छील कर कूट लीजिये। सेब को अच्छे से धोकर छिलका निकाल दे और बीच का सख्त हिस्सा हटा कर कद्दूकस करें।
- उबलते दूध में बेकिंग सोडा डालकर अच्छी तरह मिला दीजिये, कद्दूकस किया हुआ सेब डालिये और खीर में फिर से उबाल आने तक चम्मच से चलाते हुए पकाए।
- सेब के पकने और खीर के गाड़ा होने, एक जैसे मिलने के बाद सूखे मेवे और चीनी मिला दीजिये। खीर को चम्मच से चलाते हुये 2-3 मिनिट पकाये। अब सेब की खीर बन चुकी है, गैस को बन्द कर दीजिये। खीर में कुटी हुई इलाइची डालकर मिला दीजिये।
- सेब की खीर को प्याले में निकालिये और ऊपर से बारीक कटे पिस्ते और काजू से सजाइये। सेब की खीर गरम या ठंडी जैसे चाहें परोसिये और खाइये।

रसोई युक्तियाँ –

१) गुड़ की चाशनी बनाते समय अगर कढ़ाई में थोड़ा सा घी या तेल लगा देंगे तो चाशनी कढ़ाई में चिपकेगी नहीं।

२) यदि दूध की मलाई में एक चम्मच चीनी डालकर फेटा जाए तो मक्खन ज्यादा निकलता है।

३) गुलाब जामुन को एकदम सॉफ्ट और अंदर से रसीला जालीदार बनाने के लिए खोया (मावा) में थोड़ा सा पनीर या छेना डालकर मिलाये। गुलाब जामुन रसीले मुलायम और स्वादिष्ट बनेंगे।

४) रसगुल्ला स्पंजी बनाने के लिए रसगुल्ले को चाशनी में पकाते समय जब रसगुल्ले की चाशनी में रसगुल्ले फूलने लग जाए तो बीच-बीच में उसमें एक से 2 बड़े चम्मच पानी डालें, इससे चाशनी गाढ़ी नहीं होगी और रसगुल्ला ज्यादा स्पंजी बनेगे।

लेख-वर्तमान दौर में बदलता प्रेम का स्वरूप

दिल में चाहत यूँ सजे, लेकर अनुपम भाव।
आपस में विश्वास हो, रहे नहीं हिय घाव।।

वर्तमान परिदृश्य में प्रेम की परिभाषा जिस गति से बदल रही है, वह चिन्तनीय है। प्रेम में एक-दूसरे को आहत करने का भाव जहाँ पनपता है, वह वास्तविक प्रेम है ही नहीं, वह मात्र दिखावा है। बाह्य आकर्षण को प्रेम की उपमा से सम्बोधित करना उचित नहीं, यह तो दो आत्मा के परस्पर मिलन का प्राकृतिक रूप है, जिसमें स्वार्थ की भावना का कोई स्थान नहीं रहता। प्रेम के पुष्प पुरातन काल से पल्लवित होते आ रहे हैं, उनका स्वरूप बिल्कुल पवित्र होना चाहिए। प्रेम जीवन का मधुर संगीत है, इसे गलत ढंग से हासिल करने की ज़िद से बेहतर होगा उसे अपने भीतर महसूस किया जाए। प्रेम को अपनी शक्ति बनाकर प्रगति की राह चलते हुए योग्यता हासिल की जाए। साथी की खुशी में ही अपनी खुशी ढूँढनी होगी तभी प्रेम सार्थक होगा।

प्रेम के साथ विश्वास होता है, पूर्ण समर्पित भाव होते हैं, एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान होता है, किन्तु आज के दौर में खुशी देने से अधिक पाने की इच्छा बलवती होती जा रही है। फिर उसके लिए चाहे जो रास्ते अपनाने पड़े इसीलिए आजकल कभी तेज़ाब के मामले सामने आते है, तो कभी दुष्कर्म के, कभी मौत के घाट उतारने तक की खबरें हम सुनते है, कभी पारिवारिक सदस्यों की हत्या करने जैसी घटनाएँ हो जाती है, ऐसी शर्मसार घटनाएँ रूकने का नाम ही नहीं ले रही, एक घटना की आग बुझे उससे पहले दूसरी दर्दनाक घटना सामने आ जाती है, प्रेम का यह घिनौना स्वरूप समझ से परे है।

आजकल प्रेम की डोर की मजबूती आर्थिक स्थिति पर निर्भर होने लगी है, प्रेम शर्तों के आधार पर टिका रहता है। प्रेम, प्रेम न रहकर सौदेबाजी करना हो गया है, क्योंकि यहाँ भावनाएँ गौण हो गई है और उसकी जगह महँगे उपहारों की महत्ता बढ़ गई है। तभी बड़े धूमधाम से विविध डे मनाने का प्रचलन जोरों पर है। रोज डे, टेडी डे, चॉकलेट डे, वेलेंटाइन डे और भी न जाने कितने ही डे मनाए जाते हैं। वास्तविक प्रेम तो हर पल महसूस किया जाना चाहिए, वह किसी डे का मोहताज नहीं होता। पाश्चात्य संस्कृति ने हमारी संस्कृति को विनाश के कगार तक पहुँचा दिया है। केवल वेलेंटाइन डे पर प्रेम को अभिव्यक्त करना....! क्या प्रेम का स्वरूप इतना संकुचित है...!

विविध डे प्रेम की जगह अश्लीलता को बढ़ावा दे रहे हैं। देर रात तक पार्टियों में रहना, घूमना-फिरना अभिभावकों से झूठ बोलकर घर से बाहर रहना यह उचित नहीं है, इस तरह की आजादी से सर्वनाश होते देर नहीं लगती। कोई भी अभिभावक अपने बच्चों को ग़लत शिक्षा नहीं देते किन्तु बच्चों को पाश्चात्य संस्कृति इतनी प्रभावित कर रही है कि वह आसानी से अभिभावकों के साथ झूठ बोलकर उन्हें अँधेरे में रखते है। युवतियाँ भी बाह्य आर्कषण के वशीभूत होकर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देती है।

प्रेम अगर सच्चा हो तो साथी अपने प्रेमी पर किसी तरह की आँच नहीं आने देते। उनका चरित्र हनन करने की तो कल्पना भी नहीं कर सकते, किन्तु आजकल यही सब हो रहा है और इस आग में घी डालने का काम कर रहा है सोशल मीडिया....!

बिना जाँचे-परखे किसी अनजान पर इतना विश्वास करना घातक है। मोबाइल लैपटॉप पर घण्टों अपना अमूल्य समय नष्ट करना और धीरे-धीरे इस मायावी जाल में स्वयं को फँसा लेना यह बुद्धिमता नहीं है, इससे युवा वर्ग की उन्नति में भी बाधा आती है और कालान्तर से वह स्वयं को अवसाद के कटघरे में पाते हैं। भौतिक सम्पदा के आधार पर बनाई गई प्रेम की बुनियाद को ढहने में अधिक समय नहीं लगता।

"प्रेम जीवन का आधार है, खुशी है किन्तु इसे प्राप्त करने से पहले हर चुनौती को सहर्ष स्वीकार करने की मानसिकता होनी चाहिए न कि विनाश की प्रवृत्ति, यह कोई पूर्व नियोजित योजना नहीं है, कुदरत का अनुपम उपहार है, इसे समर्पण और सहनशीलता के भाव से सँजोए।"

- राजश्री राठी जी, अकोला (महाराष्ट्र)

कविता-पुलवामा

प्रिय फरवरी,
यूं तो तुम्हें प्यार का महीना माना जाता था
ना जाने फिर क्यों उन लोगों के दिल में नफ़रत का सैलाब उमड़ रहा था।

वह 14 फरवरी का दिन था
जब फूल से नहीं खून से
मोहब्बत का नहीं नफ़रत का इजहार किया जा रहा था।

जब अपने प्रिय से मिलने की नहीं, सदैव के लिए बिछड़ने की खबर मिल रही थी।
वह एक ऐसा ही दिन था
जब सभी की आंखें नम व सभी के मन में ग़म था।

कहते हैं लाल रंग प्रेम का प्रतीक होता है
मगर उस दिन लाल रंग तो था परन्तु वह प्रेम को नहीं नफ़रत को दर्शा रहा था।

ना जाने क्यों यह लोग घृणा के बीज का रोपण करते हैं जो फल स्वरूप सिर्फ पीड़ा देता है।
आओ, हम सब मिलकर प्रेम के तरू को पल्लवित व पोषित करे ताकि सिर्फ फरवरी ही नहीं बल्कि हर महीना प्रेम से भरपूर हो।

- नेहा नजवानी जी, इंदौर (म. प्र.)

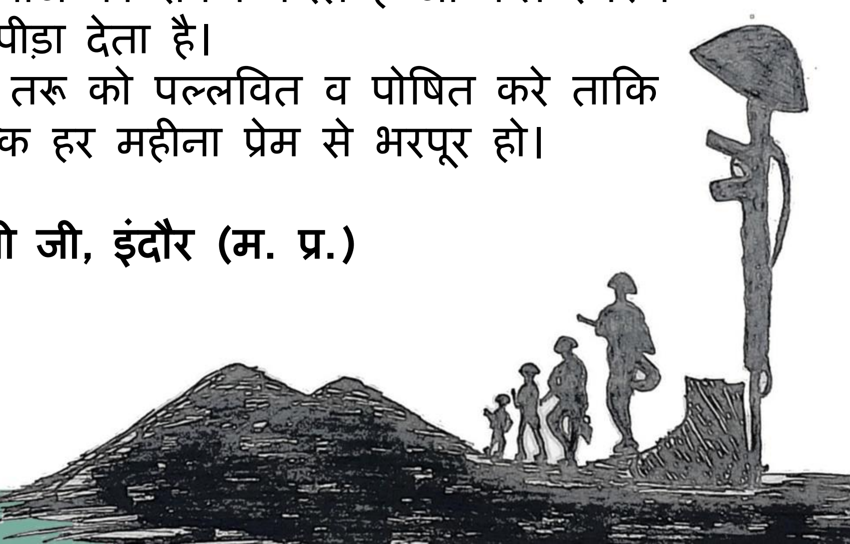

खाती नीता रोज पपीता

पाँच बजे जग जाती नीता
और नहा कर पढ़ती गीता
ड्रेस पहन विद्यालय जाती
खाकर आधा पका पपीता।

चने अंकुरित करके खाती
हरी सब्जियां चार चपाती
फल भी खाती बड़े चाव से
खेल कूद कर उन्हें पचाती।

खेल खेलना उसको भाए
कोई उसको हरा न पाए
पढ़ने में वह रहती आगे
प्रथम सदा कक्षा में आए।

सही बात पर अड़ जाती है
गलत बात पर भिड़ जाती है
कोई झूठी अकड़ दिखाए
उसके पीछे पड़ जाती है।

एक बार मम्मी से रूठी
गाल फुला कोने में बैठी
भैया को क्यों पहले दे दी
खीर भला मैं खाऊं जूठी।

मम्मी ने था पास बुलाया
और प्यार से उसे खिलाया
पहले खाने से क्यों जूठी?
खीर हुई उसको समझाया।

-श्याम सुन्दर श्रीवास्तव जी 'कोमल', लहार, भिण्ड (म. प्र.)

लोग

महानगर में बसते लोग।
व्यंग्य गाँव पर कसते लोग।

शुभचिंतक की छवि लेकर
साँपों जैसे डसते लोग।

जगह-जगह है भीड़ बहुत
कहीं न दिखते हँसते लोग।

होती है साइबर ठगी
अनजाने में फँसते लोग।

जामुन, बेल, बेर, कैथा
दिखते नहीं, तरसते लोग।

निर्धन और अशिक्षित पर
सहसा खूब बरसते लोग।

मुफ्त रेवड़ी पाने को
अपराधी से लसते लोग।

चमक-दमक आकर्षणवश
पाप - पंक में धँसते लोग।

-गौरीशंकर वैश्य जी "विनम्र", विकासनगर, लखनऊ (उ. प्र.)

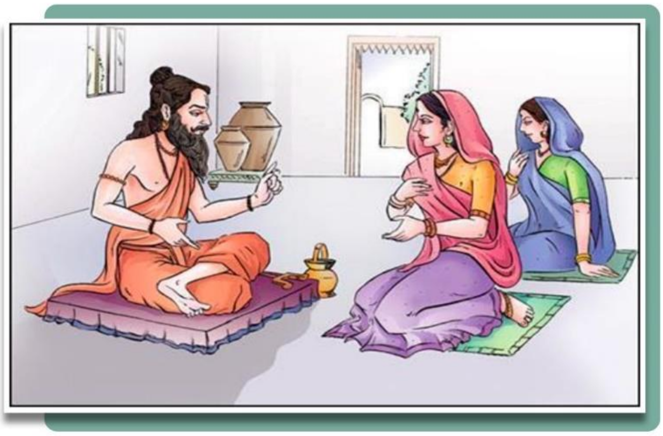

लेख-वैदिक काल की विदुषी: गार्गी एवं मैत्रेयी

विदुषी गार्गी एवं विदुषी मैत्रेयी के ऊपर चर्चा करने से पहले मैं बताना चाहती हूँ विदुषी शब्द का अर्थ क्या होता है, विदुषी का अर्थ एक ऐसी स्त्री जो बहुत विद्वान हो ऋग्वेद में विदुषी स्त्री को ऋषि कहते हैं और आज हम ऐसी ही 2 विदुषी महिलाओं के बारे में चर्चा करेंगे। **गार्गी एवं मैत्रेयी** के बारे में यह भी कहा जाता है वह ब्रह्मवादिनी थी।

महाभारत आदि ग्रंथों में भी ब्रह्मवादिनी मैत्रेयी, गार्गी वेद विदुषी महिलाओं के ब्रह्मविद्या संबंधी उच्च कोटि के संवाद प्राप्त होते हैं। यह ब्रह्मवादिनी वेद की अधिकारी विद्वान थी और वेद की शिक्षाओं की स्वामिनी बनकर शिक्षा को विश्व के लोगों के कल्याण के लिए प्रयोग करती थी। ब्रह्म वादियों के जो संस्कार प्रमुख रूप से बताए गए हैं उनमें उपनयन संस्कार का महत्वपूर्ण स्थान है। यह ब्रह्मवादिनी महिलाएं प्रतिदिन दो यज्ञ करती थी। अपने निवास पर रहते हुए भी अपने भरण-पोषण के लिए भिक्षावृत्ति करके पेट पालती थी।

गार्गी –

गार्गी वैदिक काल की एक दार्शनिक एवं ब्रह्मवादिनी थी। वैदिक काल की महिलाएं अपने अनुकरणीय बुद्धि और सर्वोच्च आध्यात्मिक गुणों के लिए प्रसिद्ध थी। गार्गी अपने उस समय की असाधारण महिलाओं में से एक थी वह विदुषी के साथ एकप्रवर्तिका भी थी। गार्गी का पूरा नाम **"गार्गी वचकनु"** था, वह ऋषि वचकनु की पुत्री थी। गार्गी की रुचि प्रारंभ से ही शिक्षाविदों के साथ रहने की थी। आपने सभी के अस्तित्व की उत्पत्ति पर प्रश्न उठाते हुए भजनों की रचना की। ब्रह्मविद्या का ज्ञान साथ होने के कारण वह ब्रह्मवादिनी कहलायी।

राजा जनक ने जब ब्रह्म यज्ञ किया उसी समय दार्शनिकों की एक बैठक का आयोजन भी किया उस बैठक में बहुत सारे दार्शनिक एकत्र हुए तथा गार्गी जी भी वहां पर सम्मिलित हुई राजा जनक ने 1000 गायें सोने की सींग मडवा कर तथा आभूषण पहना कर रखी थी जो जीतेगा वही वह गाय ले जाएगा। विद्वान बैठे रहे पहल किसी ने नहीं की सब सोच रहे थे यदि गाय ले जाते हैं तो आत्म शलघना मालूम पड़ेगी। अंत में ऋषि याज्ञवल्क्य ने अपने शिष्यों से गाय हाँक कर ले जाने के लिए कहा वैसे ही सभा में बैठे सारे विद्वान उठ खड़े हुए और फिर प्रश्न उत्तर का क्रम चालू हो गया। ऋषि ने सब को हरा दिया अंत में गार्गी जी ने याज्ञवल्क्य जी से प्रश्न पूछे उन्होंने आत्मा और सत्य के बारे में पूछा, भूत भविष्य वर्तमान तथा आकाश की रचना किसने की आदि प्रश्न पूछे तथा संतुष्टि हुई कुछ प्रश्नों पर ऋषि चुप रह गए किंतु गार्गी जी का उद्देश्य किसी का अपमान करना नहीं था उन्होंने कहा ऋषि जैसा महान अन्य कोई विद्वान नहीं है और गाय ले जाने का हक उन्हीं का है। उस समय गार्गी की उम्र केवल 18 वर्ष थी।

वह एक प्राचीन दार्शनिक वेदों के प्रसिद्ध व्याख्याता ब्रह्मविद्या की ज्ञाता के नाम से जानी जाती हैं बृहदारण्यक उपनिषद के छठी बी तथा आठवीं क्रम में आपका नाम प्रमुख है गर्ग गोत्र में जन्म लेने के कारण ही उनका नाम गार्गी पड़ा। वेदों की रचना गढ़ने में गार्गी का एक विशेष योगदान है।

मैत्रेयी –

मैत्रेयी मित्र ऋषि की कन्या थी और ऋषि याज्ञवल्क्य की दूसरी पत्नी थी। याज्ञवल्क्य जी की पहली पत्नी का नाम कात्यायनी था। मैत्रेयी की योग्यता एवं प्रतिभा के कारण ऋषि का अनुराग एवं स्नेह मैत्रेयी के प्रति अधिक था यह बात कात्यायनी को बहुत बुरी लगती थी वह मैत्रेयी से ईष्या करती थी। पति के संन्यास लेने के कारण ऋषि ने दोनों पत्नियों में अपनी संपत्ति आधी आधी बांट दी लेकिन मैत्रेयी ने पति का साथ मांगा अंत में धन प्राप्त करने के बाद अपनी सारी संपत्ति बड़ी पत्नी को सौंप कर पति के साथ चली गई। मैत्रेयी अपने पति के साथ आध्यात्मिक विषयों पर संवाद किया करती थी। आश्व लायन ग्रह सूत्र में ब्रह्म यज्ञ तर्पण में मैत्रेयी का नाम सुलभा के साथ आया।

कहा जाता है कि त्रेता युग में राजा जनक के दरबार में आध्यात्मिक वाद विवाद चला जिसमें अंत में याज्ञवल्क्य को हरा दिया वह मैत्रेयी के चरणों पर गिर पड़े तथा कहने लगे मुझे अपना शिष्य बना लो मैत्रेयी ने उन्हें अपने पति के रूप में स्वीकार किया दरबार में मैत्रेयी का सम्मानित किया गया।

प्राचीन काल से ही भारत की नारी सशक्त रही है तथा समय-समय पर अपनी योग्यता क्षमता के झंडे गाड़े हैं तथा विश्व में अपना नाम ऊंचा किया है।

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी, भोपाल (म. प्र.)

राजस्थानी भाषा में बनी पत्रिका "राजस्थानी वाणी" को पढ़ने के लिए टेलीग्राम के आइकॉन पर क्लिक करें।

लेख-प्रतिरोधक क्षमता

मजबूत रोग प्रतिरोधक शक्ति सम्भावित कोविड़ संक्रमण से बचाव में बहुत ही कारगर सिद्ध होगी –

जैसा आप सभी जानते हैं कि कोरोना संक्रमण वापस से अग्रसर होता दिखायी दे रहा है और हमेशा की तरह इस बार भी विशेषज्ञों की राय बँटी हुई है। कुछ विशेषज्ञों के अनुसार कोरोना संक्रमण प्रभाव शुन्य रहेगा तो इसके विपरित अनेक ऐसे भी विशेषज्ञ हैं जिनके अनुसार कोरोना संक्रमण बड़े पैमाने पर फैल सकता है। इस सम्भावित कोविड़ संक्रमण पर सरकार ने भी अपनी तरफ से हम सभी को सावधानी बरतने का आग्रह सन्देश दे दिया है।

इन सबको देखते हुये हम स्वयं अपने को ज्यादा से ज्यादा कैसे सुरक्षित रख सकते हैं यह समझना आवश्यक है। इसलिये आप सभी के ध्यान में लाना चाहता हूँ कि बीते तीन सालों में हमने अनेक विशेषज्ञों की कोरोना पर सलाह को टेलीविजन पर सुना व अखबारों में भी पढ़ कर समझा है, इसके अलावा अनेक वो जो क्वारंटाइन से मुक्त हुये उनके अनुभव भी सुनें, जिसका निष्कर्ष यही समझ में आया कि जिसकी "इम्युनिटी" (शरीर की स्वयं रोगों से लड़ने की ताकत/रोग प्रतिरोधक शक्ति) अच्छी होगी / मजबूत होगी उसे हर प्रकार के रोग से लड़ने में मदद मिलेगी। जिसका सीधा अर्थ यही है कि हर प्रकार की बीमारी से लड़ने में रोग प्रतिरोधक क्षमता निर्णायक भूमिका निभाती है। इसलिये हमें अपना ब्लड प्रेशर व वजन को संतुलित रखने के लिए विशेषज्ञों के राय अनुसार हर दिन व्यायाम व योगासन करते रहना चाहिये क्योंकि यह रोग प्रतिरोधक क्षमता आहार, व्यायाम, उम्र, मानसिक तनाव जैसे अनेक कारणों पर निर्भर करती है। हाँ एक तथ्य और का भी ध्यान देना है, वह है **नींद क्योंकि आराम दायक गहरी पूरी नींद हमेशा,** उपरोक्त वर्णित सभी कृत्य में बहुत ही सहायक रहेगी।

कृपया कर यह भी समझ लें कि कोई उपचार या कोई दवा तभी असर करती है जब शरीर की इम्यूनिटी अच्छी होती है यानि मजबूत होती है। इसका सीधा सीधा मतलब यही है कि किसी भी तरह कि बीमारी से निजात पाने के लिये इम्यूनिटी को बेहतर रखना हमारे स्वयं के हित में है। अब प्रश्न यह उठता है कि जब **"इम्युनिटी"** ही हर तरह के दुर्लभ बीमारियों तक की दवाई है, तो क्यों न हम अपना सारा ध्यान अपनी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने पर दें।

यहाँ एक बात आप सभी के ध्यान में ला देना चाहता हूँ कि विश्व प्रसिद्ध स्वर्गीय डॉ. के.के. अग्रवाल ने एक बार बताया था कि इम्यूनिटी बेहतर रखने में खानपान का अहम योगदान रहता है। इसलिये प्रोटीन के साथ साथ आहार में पर्याप्त एंटीऑक्सिडेंट, माइक्रो न्यूट्रिएंट्स और सभी आवश्यक विटामिन और खनिज शामिल होने चाहिए। इसलिये अब हमें यह जान लेने की बहुत आवश्यकता है कि किन किन चीजों से इम्युनिटी बढ़ती है और किन किन चीजों से इम्युनिटी घटती है।

पहले इम्युनिटी बढ़ाने वाली चीजों पर ध्यान देते हैं:-
1. योग, आसन [शरीरिक संरचना अनुसार], कोई भी खेल नियमित करें।
2. घर का बना शुद्ध भोजन ही करना सर्वोत्तम रहेगा।
3. आंवला (किसी भी रूप मे खाएं - आंवले का विटामिन "सी" कभी नष्ट नहीं होता चाहे भूनें, उबालें, पीसें, सुखाएं या पाउडर बनाएं)।
4. फल (खासकर खट्टे फल खाएं - लेकिन दोपहर में ही खाएं)।
5. सभी तरह की हरी और पत्ते वाली सब्जियाँ, दालें, गुड़, शुद्ध तेल कोई भी (रिफाइंड नहीं), दूध, दही, लस्सी, घी इत्यादि।
6. तुलसी व अन्य आयुर्वेदिक पेय पदार्थ।

शरीर की इम्युनिटी घटाने वाली चीजों से ज्यादा से ज्यादा बचाव करें –

1. मैदा (सबसे विनाशकारी/कब्जकारी पदार्थ, किसी भी रूप मे जैसे ब्रेड, पाव, नान, भटूरे, बर्गर , पिज़्ज़ा, जलेबी, समोसा, कचौरी इत्यादि बिल्कुल भी न खाएं।
2. रिफाइंड आयल बिल्कुल न खाएं। यह आयल रोग- प्रतिरोधक क्षमता को मारता है।
3. चीनी बिल्कुल नही खाएं। इसकी जगह पर गुड़, खांड़ और शहद खाएं।
4. बाहर का कोई भी जंक-फूड न खाएं।
5. प्लास्टिक में बंद और डब्बा पैक खाने को नहीं खाएं।
6. एल्युमीनियम के बर्तनों में भी खाना बनाना बन्द करने में ही भलाई है इसलिये ध्यान दे कर एल्युमीनियम बर्तनों में न बनाएं।
7. छोड दीजिए बीडी, सिगरेट पीना और तम्बाकू, गुटखे खाना क्योंकि यह लत शरीर को कई तरह से नुकसान पहुंचाती है।
8. किसी भी प्रकार का कोल्ड-ड्रिंक बिल्कुल नही पीयें। इसकी जगह पर आम का पना, नींबू शरबत (शिकंजी), सत्तू घोल, खांड का शरबत आदि प्रयोग कर सकते हैं।
9. अत्यंत ठंडा फ्रिज का पानी भी ना पियें।

लेकिन अब उपरोक्त वर्णित के अलावा, यहाँ इस बार आने वाली सम्भावित लहर के मद्देनजर निवेदन करना चाहूँगा, जिसपर सभी विशेषज्ञ एकमत हैं जो निम्न हैं–
- आप को **"मास्क और दो गज की दूरी...जान बचाने के लिये फिर जरूरी"** कि पालना हर हालत में करते रहना है ताकि आप अपने आप को सम्भावित खतरे से आसानी से बचा सकें। यह कदम हमें साधारण सर्दी खांसी में भी संक्रमित होने से बचाता है। इसलिये किसी भी हालत में बिल्कुल भी लापरवाही न बरतें।
- इसके साथ जहाँ तक सम्भव हो बेवजह बाहर मत निकलिये ताकि भीड़ से बच सकें। वृद्धजनों के लिये तो यह आवश्यक सा ही माने।

इसलिये एक बार फिर यही दोहराना चाहूँगा कि जब तक कोई व्यक्ति अपने रक्षा संस्थान को तैयार नहीं कर लेता, तब तक वह सुरक्षित नहीं है क्योंकि आपकी अपनी इम्युनिटी (रोग- प्रतिरोधक लायक स्वस्थ शरीर) ही हर बीमारी की दवाई है, यही कारण है कि सब समय हर मिलने वाले को कहता रहता हूँ - **"हर बीमारी से बचने के लिये, करें रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत।"**

- गोवर्धन दास बिन्नाणी जी, "राजा बाबू", बीकानेर (राज.)

कहावत - बावन बुद्धि बाणियाँ तरेपन बुद्धि तेली।

बनिये के घर तिल है तो वापस उगेंगे। मतलब इधर आत्मा जन्म मरण में आयेगी। 52 का ज्ञान - समस्त शास्त्रों का ज्ञान है। पढ़ना व पढ़ाना इस पर चलना 52 का ही है। अक्षर में राम भी रटो तो भी नेः अक्षर नहीं।

वर्तमान में शास्त्र वाचन- बावन अक्षर सब कोई खोजे, परमतत् काहू नहीं सूझे।
पद - **बिन ज्ञान सबै नर अंधा, उलटा पड़या गले बोहो फंदा।।**
हद गुरु जितने भी है वो शास्त्र से कल्याण बताते है और पढ़ते है। इनको परमतत् कभी मिलता। जब तक केवल पद का संत विधि का ज्ञान नहीं मिले और वे उसी से कल्याण बताते है मानकर बैठ जाते है। शिष्य को तारने का दम रखते है तो ये अंधे है जन्म-मरण में आयेंगे। झुं बनने से कर्म - बंधन और मजबूत होगा। यही उलटा फंदा पड़ेगा।

रामायण- शिष्य से धन हर ही, शोक न हर 1 सो गुरु घोर नरक में पड़ही ।।

ताश का खेल 52 पते का खेल है। पीसते रहो। खेलते रहो। जन्म-मरण में आते रहो भी जोकर सबसे ऊपर। हमारी पढ़ाई में म= 25 नं. पर आता है, र 27 नं. पर, 25 + 27 = 52 को रटा = आ की मात्रा से "राम" र ब्रह्म, म माया, ब्रह्म माया का शरीर जब तक मरण में आना पड़ेगा।

संत विधि - 53वाँ उश्वांस में जब राम रटना अर्थात् घाणी चलाना। तिल में तेली डालता है जब तेल निकलता है। जल रूप परमात्मा का नाम "राम" है। यह रटने से 54वाँ ने नकट होता है। 55 में 6 पूर्व के 6 पश्चिम के कँवल (ताले) खुलते है। तब आत्मा दशवें आती है। रोजाना राम रटकर नेः अक्षर का संग करती है तो कर्म खत्म होता है।

- संत शिष्य जगदीश प्रसाद जागेटिया जी, ब्यावर (राज.)

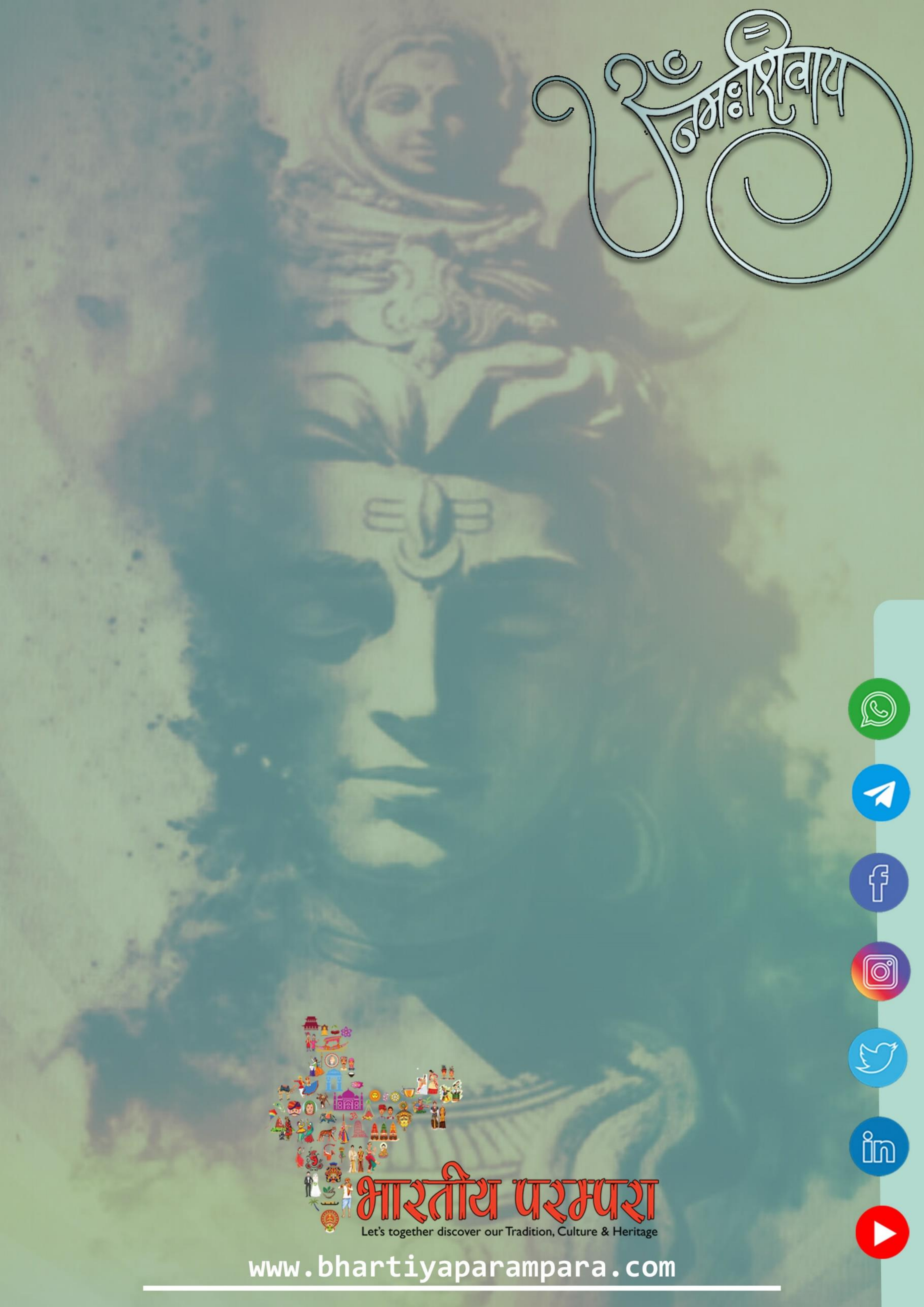
ॐ नमः शिवाय
भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
www.bhartiyaparampara.com